15 / 09 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अंतिम समय का पुरुषार्थ -
अव्यक्त फरिश्तापन की स्थिति का अनुभव करना

➢➢ मैं इस देह में अवतरित आत्मा हूं

➳ _ ➳ अमृतवेला के पावन समय मे आंख खुलते ही बापदादा को सामने देख बडे प्यार से गुडमोर्निंग करती हूं और बाबा भी कहते गुड मोर्निंग मीठे बच्चे

→ फिर मन बुद्धि को एकाग्र कर मैं आत्मा बैठ जाती हूं स्वमान की सीट पर सेट होकर...

→ मैं आत्मा इस स्थूल शरीर को छोड लाइट का शरीर धारण कर उड चलती हूं इस चांद सितारों की दुनिया से पार सूक्ष्म वतन में

→ जहां चारो ओर सफेद चांदनी अपनी अनुपम छटा बिखेर रही है और मुझ आत्मा के सम्मुख है फरिश्तो के शहजादे ब्रह्मा बाबा जो अव्यक्त होते हुए भी ऐसे अनुभव हो रहे जैसे साकार मे सम्मुख हो

■ बाबा की साकार स्वरुप और साकार पालना का अनुभव हर बच्चा कर रहा है

→ इसी अनुभव से और यादों से मैं आत्मा अपने लाइट के शरीर से पहुंच जाती हूं मधुबन की पावन भूमि पर

→ इस पावन व तपस्या भूमि का कोना कोना बाबा के हर कर्म की यादगार दिला रहा है और मुझ आत्मा को अपने लक्ष्य की स्मृति दिला रहा है

→ मुझ आत्मा के मन से यही गीत निकल रहा है - दिल का हर संकल्प यही है बाबा तुम सा बनना ही है...

→ मुझ आत्मा को बस फालो फादर करना ही है

→ मुझ आत्मा को बस इस स्वमान की सीट पर सेट रहना है कि मैं देह नही इस देह मे अवतरित आत्मा हूं

→ मैं आत्मा बाबा से आती अनन्त शक्तियों को स्वयं मे समाती व वरदानी हस्त को सदा अपने ऊपर अनुभव कर रही हूं

→ बाबा से प्रोमिस करती हूं मेरे मीठे प्यारे मैं आत्मा आपके स्नेह का रिटर्न व आश को जल्द व जरूर पूरा करूंगी

→ मैं आत्मा स्वयं को इस देह मे अवतरित समझ सेवार्थ धीरे धीरे वापिस साकारी लोक मे आ जाती हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूं कि क्या मुझ आत्मा को चलते फिरते कर्म करते ये स्मृति रहती है कि मै अव्यक्त देश का वासी हूं

→ मैं आत्मा सदा अपने को बापदादा की छत्रछाया मे अनुभव करती हूं

→ बापदादा सदा मेरे साथ है

→ कम्बाइंड स्वरूप की स्थिति से कोई भी मुश्किल परिस्थिति सहज पार कर रही हूं

→ अपनी हर जिम्मेवारी का बोझ बापदादा को सौंप हल्का अनुभव कर रही हूं

→ मैं आत्मा हर कर्म करते कर्मबंधन से मुक्त व न्यारा अनुभव कर रही हूं

→ मैं आत्मा हरेक के मस्तक मे बस चमकती मणि को ही देख रही हूं

→ आत्मिक दृष्टि रखने से मुझ देहभान पुराने स्वभाव संस्कार समाप्त होते जा रहे है

→ ये देह बापदादा से मिली अमानत है व इस देह से सेवार्थ इस धरनी पर पार्ट बजाने आयी हूं व फिर वापिस जाना है

→ मैं अव्यक्त वतन वासी हूं फरिश्ता हूं इस स्मृति के अभ्यास को बढ़ाती जा रही हूं

■ इसके लिए बीच बीच मे मुझ आत्मा को अव्यक्त भाव को सदा स्वरुप मे लाना है

→ मैं आत्मा लाइट हूं व लाइट के कार्ब में हूं कर्म करते हुए चलते फिरते इस अभ्यास को बढाती जा रही हूं

■ लाइट हाऊस शिव बाबा से कनेक्शन जोड़ लाइट रुप से लाइट ही लाइट चारो और फैला रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर ज्ञानसूर्य हूं

→ जैसे सूरज की रोशनी व किरणें स्वतः ही चारो और फैलती है ऐसे ही ज्ञान सूर्य से रंग-बिरंगी शक्तिशाली किरणों से भरपूर होकर मैं आत्मा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते रुहानियत की खुशबू फैला रही हूं

→ मुझ आत्मा के सम्बंध सम्पर्क मे आने वाली आत्मायें भी लाइट अनुभव कर रही है

→ मै आत्मा रुहानी ड्रिल साकारी से आकारी व निराकारी स्थिति का अभ्यास करती रहती हूं

■ मैं आत्मा अशरीरी हूं व परमधाम निवासी हूं

■ मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूं

→ मैं आत्मा बाबा से शक्तियां लेकर सर्व शक्तियों को चारो ओर फैला रही हूं

→ मैं आत्मा विघ्नविनाशक हूं इस स्वमान की सीट पर सेट होकर विघ्नों का विनाश करती जा रही हूं